E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

वेणीसंहार के षष्ठ अंक का सारांश

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

महाभारत-संग्राम के अन्तिम दिन द्रौपदी के साथ बैठे हुए युधिष्ठिर चिन्तित अवस्था में कहते हैं- 'आह! भीम ने प्रतिज्ञा कर ली है कि 'यदि आज मैं दुर्योधन का वध नहीं कर सका तो आत्महत्या कर लूँगा'। इस समाचार से न जाने दुर्योधन कहाँ छिप गया है।

युधिष्ठिर अनुचर को आज्ञा देते हैं कि सुयोधन की गतिविधियों पर ध्यान रखने वाले भक्त गुप्तचर भीम द्वारा की गई अपने वध की भीषण प्रतिज्ञा को सुनकर छिपे हुए दुर्योधन का पता लगाने के लिए समन्तपञ्चक क्षेत्र के चारों ओर चले जाएं तथा पङ्क अथवा रेत में गुप्त पदचिह्नों को पहिचानने वाले दास, लता-कुञ्जों की जानकारी रखने वाले वल्लव, गजव्याघ्रादि युक्त रन्ध्रों एवं श्वपचवस्तियों के जानकार और सिद्ध वेषधारी गुप्तचर मुनियों के आश्रमों पर उसे तलाश करें।

दुर्योधन को ढूंढ़ने के लिए नियुक्त पुरुषों में से पाञ्चालक आकर बताता है कि भीम के किसी परिचित व्याध ने बताया है कि अमुक जलाशय तक एक पदपद्धति (चरण-चिह्न) जल के समीप पहुँचकर लौटी नहीं है। इस समाचार पर भीम आदि सभी लोग वहाँ पहुँच गये और भीम ने तार स्वर से दुर्योधन के पूर्वकालिक कुकृत्यों के लिए उसकी भर्त्सना की और कहा कि छिपे क्यों हो? बाहर आओ। इस प्रकार धिक्कारते हुए उन्होंने अपनी गदा से उस सरोवर को आलोडित करके उसके समस्त जल को उछालकर बाहर फेंक दिया। तदुपरान्त दुर्योधन विक्षुब्ध होकर दोनों हाथों से भीषण गदा उठाकर घुमाता हुआ बाहर निकल आया। दुर्योधन को भीम ने विकल्प दिया कि पाँच पाण्डवों में से जिस किसी को चाहो, अपने से द्वन्द्व युद्ध के लिए चुन लो। भीम को ही दुर्योधन ने चुना। दोनों में युद्ध हो रहा है। भगवान् कृष्ण ने संदेश भेज दिया है कि आप (युधिष्ठिर) अभिषेक की तैयारी करें।

इधर युधिष्ठिर भगवान् के आदेशानुसार तैयारी कर ही रहे थे कि दुर्योधन का मित्र चार्वाक नामक राक्षस मुनि-वेष धारण करके युधिष्ठिर के पास आकर कहता है कि गदा युद्ध में दुर्योधन ने भीम को मार गिराया है। अब अर्जुन और भीम का युद्ध चल रहा है। दुर्योधन के पक्षपाती बलराम कृष्ण को लेकर द्वारका चले गये। इसे सुनकर युधिष्ठिर और द्रौपदी विलाप करते हुए चिता में जल मरने के लिए उद्यत हो जाते हैं। किन्तु परिजनों में से कोई भी आज्ञा देने पर भी चिता नहीं बना रहा है। युधिष्ठिर स्वयं चिता बनाते हैं। उसी समय शंख का निर्घोष और कलकल सुनाई पड़ता है। दुर्योधन आ रहा है- इस भय से युधिष्ठिर जल मरने के लिए शीघ्रता करने लगते हैं। उन्हें भ्रान्ति हो जाती है कि अर्जुन मार डाला गया।

भीम दुर्योधन को मारकर रक्तरंजित होकर उनके पास आ रहा है। उसे युधिष्ठिर और द्रोपदी समझते हैं कि दुर्योधन है। तब युधिष्ठिर उसे मारने के लिए धनुष लेने लगते हैं। भीम अपना परिचय देता है और पूछता है कि द्रौपदी कहाँ है? वह डरकर युधिष्ठिर के चिता में कूदने जा रही थी। भीम उसे पकड़ लेता है। युधिष्ठिर भीम से भिड़ जाते हैं। उसे दुरात्मन्, भीमार्जुनशत्रो आदि कहने लगते हैं। तभी कंचुकी उन सब की भ्रान्ति दूर कर देता है। भीम द्रौपदी की वेणी बांधता है। थोड़ी देर में अर्जुन और कृष्ण भी आ जाते हैं। भगवान् कृष्ण युधिष्ठिर से कहते हैं कि महाराज युधिष्ठिर! मैं यह देखकर कि आप चार्वाक के कपटों से व्याकुल हो रहे हैं, अर्जुन को लेकर शीघ्र आया हूँ। पर मुझे मार्ग में ही पता लग गया कि नकुल ने उसे पकड़ लिया है। अब बताइए कि और क्या आपका उपकार करू। युधिष्ठिर कहते हैं कि भगवन्! आप में अद्वैत भक्ति हो, यही और चाहिए। भगवान् कहते हैं-'एवमस्तु'। भरतवाक्य के साथ ही नाटक समाप्त हो जाता है।